गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

जिस देश की अपनी कोई भाषा नहीं, वह देश गुलामी की जंजीरों से कभी पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकता।

राजपाल

सत्र : 2024-25

अगस्त, 2025

हिन्दी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 01 अंक 08 अगस्त 2025
भाद्रपद | विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
डॉ. देवेंद्र, डॉ. वीरेंद्र

छात्र सम्पादक

किरण रानोलिया
रिनू
राहुल, प्रियंका
संतोष

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522, 9785775350

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

परिचय

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी - एक परिचय
मैथिलीशरण गुप्त - एक परिचय

गुरु जाम्भोजी: कृष्ण अवतार और विश्वशांति के अग्रदूत
साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
प्रशासनिक शब्दावली
मेरा संविधान मेरा स्वाभिमान
पुस्तक समीक्षा

संदेश

हमारा स्वतंत्रता संग्राम केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं थी; यह एक विचार, एक भावना और एक सामूहिक संकल्प का नाम था। यह वह अग्नि-परीक्षा थी जिसमें लाखों वीरों ने अपने प्राणों की आहुति देकर 'भारत माता' को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराया। 1857 का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम हो, भगत सिंह की क्रान्तिकारी चिंगारी हो, गाँधी जी का अहिंसक सत्याग्रह हो, या सुभाष चंद्र बोस का 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा' का उद्घोष—ये सभी हमारे राष्ट्रीय चरित्र की अमिट धरोहर हैं।

परंतु केवल इतिहास को पढ़ना और याद रखना ही पर्याप्त नहीं है। आज की युवा पीढ़ी, जो इस स्वतंत्र भारत की धरोहर है, उसके सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि उसने इस स्वतंत्रता का कितना सदुपयोग किया है? स्वतंत्रता का सही अर्थ है—उत्तरदायित्व। उन महान विभूतियों के सपनों का भारत बनाने का उत्तरदायित्व।

हमारा कर्तव्य है कि हम अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों का भी निर्वहन करें और एक ऐसे भारत के निर्माण में सहभागी बनें जो ज्ञानवान, समृद्ध और समावेशी हो।

जय हिन्द! जय भारत!

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

संपादकीय

स्वतंत्रता संग्राम: वीरता की गाथा और युवाओं की प्रेरणा

भारत का स्वतंत्रता संग्राम एक ऐसा अध्याय है जिसमें वीरता, त्याग और देशभक्ति की अमर कहानियाँ समाहित हैं। यह केवल इतिहास की घटना नहीं, बल्कि एक जीवंत विरासत है जो आज भी हमें राष्ट्रनिर्माण के लिए प्रेरित करती है। 1857 से लेकर 1947 तक की इस लंबी यात्रा में असंख्य वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी, तब जाकर हमें यह आज़ादी मिली। परंतु क्या हम उनके सपनों का भारत बना पाए हैं? यह प्रश्न आज भी हमारे सामने मुँह बाए खड़ा है। स्वतंत्रता संग्राम की सबसे बड़ी विशेषता थी—अनेकता में एकता। इस संग्राम में हर वर्ग, धर्म और क्षेत्र के लोगों ने भाग लिया। महात्मा गाँधी के अहिंसावादी आंदोलनों से लेकर भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस और चंद्रशेखर आज़ाद जैसे क्रांतिकारियों की देशभक्ति ने अंग्रेजों की नींव हिला दी। रानी लक्ष्मीबाई की वीरता, सरदार पटेल की दूरदर्शिता और डॉ. अंबेडकर के संवैधानिक विज्ञान ने इस देश को नई दिशा दी। आज का युग डिजिटल है। युवा सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं, लेकिन क्या वे अपने इतिहास से जुड़े हैं? स्वतंत्रता संग्राम केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि एक ऐसी चिंगारी है जो युवाओं में राष्ट्रप्रेम की भावना जगा सकती है। हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहना होगा, तभी हम एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

आइए, हम सभी प्रण करें कि हम अपने देश की आज़ादी की रक्षा करेंगे और इसे सशक्त बनाने में अपना योगदान देंगे।

संपादक

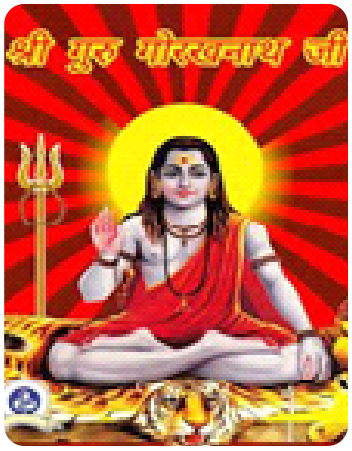

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

साधना तथा अन्य पक्षों पर विचार :
गोरक्षनाथ की साधना हठयोग और राजयोग की साधना का समन्वय है। इसी से पररपद की प्राप्ति होती है। जिससे पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों साधे जाते है। क्योंकि इसमें समान तत्व विद्यमान है। ऐसा मानना है कि हठयोग की दो विधियाँ है एक तो गोरक्षनाथ को पूर्ववर्ती जिसका उपदेश मृकण्डुपुत्र (मार्कण्डेय) आदि ने किया था। और दूसरी गोरक्षनाथ आदि द्वारा पहली विधि आठ अंगो को स्वीकार करती है, और दूसरी केवल अन्तिम छः अंगों को।

(1) यम : नाथ योगी षडंग योग साधना के अन्तर्गत 'यम' और 'नियम' को नही मानते फिर भी प्रारम्भिक योग साधना के रूप में उन्हें महत्व अवश्य देते है। नाथ-योगी परम्परा में 10 यम माने गये है-

"अहिंसा सत्यम्, अस्तयेम् ब्रह्मचर्यम् क्षमा धृतिः। दयार्जवं मिताहारः शौच चैव यमो दशः ।।'

1. अहिंसा: सुंदरदास के मतानुसार मन-वचन कर्म से दोष न करना और शरीर से घात न करना अहिंसा है क्योंकि जीव हिंसा और मांस भक्षण आदि प्राणायाम के लिये घातक है।
2. सत्यता : जीवन की आन्तरिक तथा बाह्य दोनों ही क्षेत्रों में सत्य का पालन करना चाहिये।
3. चोरी न करना: क्रिया से ही नही, मन में भी चोरी का विचार नही आना चाहिये। मन से इस भावना को बिल्कुल त्याग देना चाहिये।
4. ब्रह्मचर्य : सुंदरदास ने ब्रह्मचर्य के अन्तर्गत आठ प्रकार के कामों (मैथुनों) को त्यागने के लिये कहा है। मैथुन से अथवा नारी से बचना उनके लिये इसलिये आवश्यक है क्योंकि नारी का संग भक्ति, मुक्ति औरज्ञान तीनों में बाधक है। नाथपंथियों ने नारी को केवल जननी या माता के रूप में सम्बोधित किया है।
5. क्षमा :- दूसरे के दोषों को क्षमा कर देना चाहिये। यदि कोई हमें हानि पहुँचाता है तो भी हमें उससे बदला लेने की बात नही सोचनी चाहिये। तात्पर्य यह है कि हमें बुराई का बदला अच्छाई से देना चाहिये।
6. धैर्य और सहनशीलता : एक अच्छे साधक को किसी भी विषम परिस्थिति में भी धैर्य और सहनशीलता का त्याग नहीं करना चाहिये। उसे कठोरताओं को सहन करने की शक्ति का अभ्यास करना चाहिये।
7. दया: आपत्ति में पड़े हुये जीवों तथा व्यक्तियों पर दया करनी चाहिये। उनकी कठिनाइयों को अपना समझकर उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिये।
8. जीवन में सरलता: एक योगी को प्रदर्शन और बनावट से परे होकर सरलता का अभ्यास करना चाहिये। योगी वही है जिसका स्वभाव सरल हो छल प्रपंच से परे।
9. मिताहार : मिताहार का विस्तृत विवरण गोरख तथा अन्य नाथों की रचनाओं मे उपलब्ध है। गोरखवानी मे स्थान-स्थान पर मद्य-मांस का पान और भक्षण ही निषिद्ध ठहराया है। एक आध्यात्मिक साधक को सदैव स्मरण रखना चाहिये कि भोजन शरीर में पोषण के लिये है न कि रसना स्वाद के लिये।
10. शौच : यम का अन्तिम तत्व शौच है। तन और मन दोनों की पवित्रता पर ध्यान रखना चाहिये। तन की पवित्रता के लिये शुद्ध जल में स्नान करना, शुद्ध भोजन ग्रहण करना, शुद्ध वायु में श्वास लेना तथा मन की पवित्रता के लिये विचारों, प्रवृत्तियों, इच्छाओं और कामनाओं को पवित्र रखने का प्रयास करना चाहिये।

(2) नियम : महान योगी शिक्षकों द्वारा 'नियम' की दस निम्नलिखित विधियाँ है-

"तपः संतोष आस्तिक्यं दानमीश्वर पूजनम्। सिद्धान्त वाक्य श्रवणं ही मतिश्च जपों हुतम् ।। नियमा दश संप्रोक्ता योग शास्त्र विशारैदः।'

1. तप: तप से तात्पर्य आत्मसंयम के अभ्यास से है। सुंदरदास ने तप को शब्द 'स्पर्श', रूप, रस, गंध, का परित्याग तथा अहंकार का मारण बताया है। जबकि कबीरदास ने जप और तप दोनों को निरर्थक बताया है। तप के लिये वनखण्ड में जाना व्यर्थ है।
2. सन्तोष : सन्तोष से तात्पर्य है अपने शुद्ध मन से अपने कर्तव्यों का पालन करते हुये जो कुछ भी प्राप्त हो जाये उसमें प्रसन्न रहना। प्रत्येक स्थिति में शान्ति और प्रसन्नता रखना भी संतोष के लक्ष्य है।
3. आस्तिक्य : आस्तिकता से तात्पर्य यह है कि वेदों में गुरू के निर्देशों में वर्तमान और प्राचीन साधकों और महात्माओं में विश्वास रखना चाहिये। नाथों ने आस्तिकता के लक्षणों का निरूपण नहीं किया। परंतु नाथ आस्तिक है। नाथपंथी कर्मवाद और मृत्युपरान्त जीवन में विश्वास रखते है। ईश्वर में भी विश्वास करते हैं।
4. दान : दान का तात्पर्य उदारता का अभ्यास है।
5. पूजा : शास्त्र विधि के अनुसार प्रेम, आदर, श्रद्धा, और भक्ति से की गई उपासना ही ईश्वर पूजा है। नाथों ने भावात्मक पूजा को ही स्वीकार किया है।
6. सिद्धान्त वाक्य श्रवण : सिद्धान्त वाक्य श्रवण का अर्थ शास्त्रों के क्रमपूर्ण अध्ययन और श्रवण से है। सिद्धान्त वाक्य के सम्बन्ध में नाथों के शास्त्र ग्रंथ सिद्धों द्वारा सिद्धान्तों को सिद्धान्त कहते है।
7. ही : अक्षय कुमार बनर्जी ने ह्री का अर्थ किसी प्रकार के बुरे या दूषित कार्य करने से, अच्छाई, नैतिकता और आध्यात्मिकता के मार्ग से हटने से, मन में किसी प्रकार के बुरे विचार, भावना या इच्छा के बनाये रखने से, अवाच्छित, असत्य, हानिप्रद या हिंसात्मक शब्द-कथन से होने वाले पश्चाताप और लज्जा से है।

गुरु गोरखनाथ के पद

आऊँ नहीं जाऊँ निरंजन नाथ की दुहाई। प्यंड ब्रह्मांड खोजंता अम्हे सब सिधि पाई ॥ टेक ॥
काया गढ भीतर नव लख खाई। दसवें द्वारि अवधू ताली लाई ॥ काया गढ भीतरि देव देहुरा कासी। सहज सुभाइ मिले अविनासी ॥ बदंत गोरखनाथ सुणौ नर लोई। काया गढ जीतैगा बिरला कोई ॥

शरीर (प्यंड) और जगत में मैंने सब सिद्धियाँ पा ली हैं। अब निरंजननाथ की शपथ है कि मैं न तो इस जगत में जन्म लूँगा और न मृत्यु पाकर चला जाऊँगा अर्थात् जन्म-मरण से मेरा सम्बन्ध न रहेगा। शरीर रूपी गढ में नौ द्वार (खाई) हैं, परन्तु अरे अवधू ! मैंने तो दसवें द्वार ब्रह्मरन्ध्र में लौ लगा दी है। इस शरीर में ही देव-मन्दिर और काशी हैं। वह अविनाशी ब्रह्म तो स्वाभाविक रूप में आचरण करने से मिलता है। गोरख कहता है-हे लोगो, सुनो ! इस शरीर के गढ पर कोई बिरला योगी ही विजय प्राप्त करेगा।

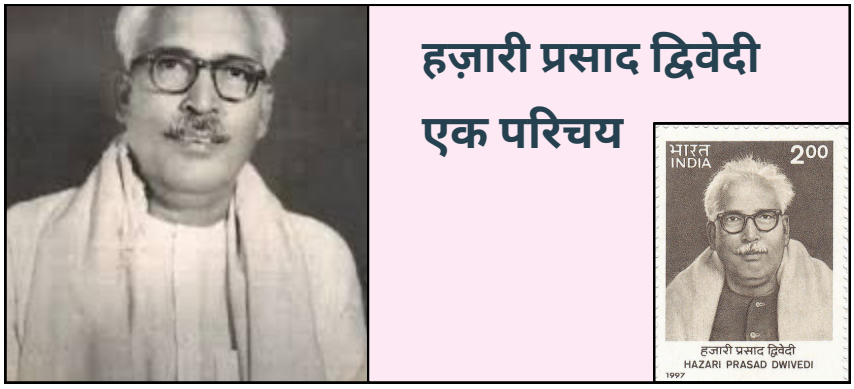

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी
जन्म- 19 अगस्त 1907
दुबे का छपरा (ओझवलिया) ग्राम बलिया, भारत
मृत्यु- 19 मई 1979
दिल्ली, भारत
पेशा- लेखक, आलोचक, प्राध्यापक
राष्ट्रीयता- भारतीय
काल- आधुनिक काल
विधा- हिन्दी निबन्धकार, आलोचक और उपन्यासकार

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म श्रावण शुक्ल एकादशी संवत् 1964 तदनुसार 19 अगस्त 1907 ई० को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के दुबे का छपरा, ओझवलिया नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री अनमोल द्विवेदी और माता का नाम श्रीमती ज्योतिष्मती था। इनका परिवार ज्योतिष विद्या के लिए प्रसिद्ध था। इनके पिता पं० अनमोल द्विवेदी संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। द्विवेदी जी के बचपन का नाम वैद्यनाथ द्विवेदी था।

द्विवेदी जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में ही हुई। उन्होंने 1920 में बसरिकापुर के मिडिल स्कूल से प्रथम श्रेणी में मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद उन्होंने गाँव के निकट ही पराशर ब्रह्मचर्य आश्रम में संस्कृत का अध्ययन आरम्भ किया। सन् 1923 में वे विद्याध्ययन के लिए काशी आये। वहाँ रणवीर संस्कृत पाठशाला, कमच्छा से प्रवेशिका परीक्षा प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान के साथ उत्तीर्ण की। 1927 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी वर्ष भगवती देवी से उनका विवाह सम्पन्न हुआ। 1929 में उन्होंने इंटरमीडिएट और संस्कृत साहित्य में शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1930 में ज्योतिष विषय में आचार्य की उपाधि प्राप्त की। शास्त्री तथा आचार्य दोनों ही परीक्षाओं में उन्हें प्रथम श्रेणी प्राप्त हुई।

द्विवेदी जी का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली और उनका स्वभाव बड़ा सरल और उदार था। 8 नवम्बर 1930 से द्विवेदीजी ने शांति निकेतन में हिन्दी का अध्यापन प्रारम्भ किया।

वहाँ गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर तथा आचार्य क्षितिमोहन सेन के प्रभाव से साहित्य का गहन अध्ययन किया तथा अपना स्वतंत्र लेखन भी व्यवस्थित रूप से आरंभ किया। 1949 ई. में लखनऊ विश्वविद्यालय ने उन्हें डी. लिट् की मानद उपाधि से सम्मानित किया। बीस वर्षों तक शांतिनिकेतन में अध्यापन के उपरान्त द्विवेदीजी ने जुलाई 1950 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रोफेसर और अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। 1957 में राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किये गये।

प्रतिद्वन्द्वियों के विरोध के चलते मई 1960 मे द्विवेदीजी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिये गये। जुलाई 1960 से पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में हिंदी विभाग के प्रोफेसर और अध्यक्ष रहे। अक्टूबर 1967 में पुनः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिंदी विभागाध्यक्ष होकर लौटे। मार्च 1968 में विश्वविद्यालय के रेक्टर पद पर उनकी नियुक्ति हुई और 25 फरवरी 1970 को इस पद से मुक्त हुए। कुछ समय के लिए 'हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण' योजना के निदेशक भी बने। कालान्तर में उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के अध्यक्ष तथा 1972 से आजीवन उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के उपाध्यक्ष पद पर रहे। 1973 में 'आलोक पर्व' निबन्ध संग्रह के लिए उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

4 फरवरी 1979 को पक्षाघात के शिकार हुए और 19 मई 1979 को ब्रेन ट्यूमर से दिल्ली में उनका निधन हो गया।

मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त पर जारी डाक टिकट
जन्म- 3 अगस्त 1886
चिरगाँव, उत्तर प्रदेश, ब्रिटिश भारत
मृत्यु- दिसम्बर 12, 1964 (78 वर्ष की आयु में)
पेशा- कवि, राजनेता, नाटककार, अनुवादक
राष्ट्रीयता- भारतीय
शिक्षा- प्राथमिक-चिरगाँव, मिडिल - मैकडोनल हाई स्कूल
उल्लेखनीय काम- पंचवटी, सिद्धराज, साकेत, यशोधरा, विश्ववेदना आदि
उपाधि- हिन्दुस्तान अकादमी पुरस्कार (साकेत के लिए- ₹500) (1935)
मंगलाप्रसाद पुरस्कार (साकेत के लिए), हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा (1937) [1]
साहित्यवाचस्पति (1946)
पद्मभूषण (1954)
महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से गुप्त जी ने खड़ी बोली को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया और अपनी कविता के द्वारा खड़ी बोली को एक काव्य-भाषा के रूप में निर्मित करने में अथक प्रयास किया। इस तरह ब्रजभाषा जैसी समृद्ध काव्य-भाषा को छोड़कर समय और संदर्भों के अनुकूल होने के कारण नये कवियों ने इसे ही अपनी काव्य-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। हिन्दी कविता के इतिहास में यह गुप्त जी का सबसे बड़ा योगदान है। घासीराम व्यास जी उनके मित्र थे। पवित्रता, नैतिकता और परंपरागत मानवीय सम्बन्धों की रक्षा गुप्त जी के काव्य के प्रथम गुण हैं, जो 'पंचवटी' से लेकर 'जयद्रथ वध', 'यशोधरा' और 'साकेत' तक में प्रतिष्ठित एवं प्रतिफलित हुए हैं। 'साकेत' उनकी रचना का सर्वोच्च शिखर है।

Basic English and Advanced English

1. Hello - What's up
2. Goodbye- Catch you later
3. Please- Kindly
4. Thank you - Much obliged
5. You're welcome - No problem
6. Excuse me - Pardon me
7. I'm sorry - My bad
8. Yes - Absolutely
9. No - Nope
10. I don't know - Beats me
11. How are you? - How's it going?
12. Text me - How's it going?
13. I decided- I made up my mind
14. I can't decide- I am on the fence
15. I can't believe it - No way!
16. I will think about it - I will sleep on it
17. Managing quite well - So far so good
18. Serene – calm and peaceful
19. Grateful – thankful
20. Delightful – very pleasant

गुरु जाम्भोजी: कृष्ण अवतार और विश्वशांति के अग्रदूत

भारत की धरती अवतारों और ऋषि-मुनियों की भूमि रही है। इन्हीं में से एक हैं लोकदेवता, समाज सुधारक, पर्यावरण संरक्षक और विश्वशांति के अग्रदूत गुरु जाम्भोजी। उन्हें भगवान कृष्ण का अवतार माना जाता है, जो कलियुग में मानवता को सद्मार्ग दिखाने, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की शिक्षा देने के लिए प्रकट हुए।
गुरु जाम्भोजी का जन्म विक्रम संवत १५०८ (सन् १४५१ ई.) में राजस्थान के नागौर जिले के पीपासर गाँव में एक हिंदू पंवार राजपूत परिवार में हुआ था। उनके पिता लोहटजी पंवार और माता हंसा देवी थीं। बचपन से ही उनमें दिव्य लक्षण दिखाई देने लगे थे। मान्यता है कि जन्म के समय उनके मुख से "तेरा-तेरा" का मंत्र निकला, जो आगे चलकर उनके द्वारा दिए गए "विश्व को एक सूत्र में बांधने वाले" मंत्र की नींव बना।
गुरु जाम्भोजी को भगवान कृष्ण का अवतार मानने के पीछे कई आध्यात्मिक और लौकिक कारण हैं:

1. दिव्य उद्देश्य: जिस प्रकार भगवान कृष्ण ने द्वापर युग में अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना के लिए अवतार लिया, उसी प्रकार कलियुग में फैली असमानता, अज्ञान और सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए जाम्भोजी का प्राकट्य हुआ।
2. दार्शनिक समानता: कृष्ण के "निष्काम कर्म" के दर्शन को जाम्भोजी ने "जीव दया, पानी बचाओ, धरती बचाओ" के व्यावहारिक रूप में परिवर्तित किया।
3. लोककल्याण की भावना: कृष्ण की तरह, जाम्भोजी का संदेश जाति-पाति, ऊँच-नीच से परे सीधे आम जनता के कल्याण के लिए था। उन्होंने सभी को समान बताया और सादगीपूर्ण जीवन जीने का उपदेश दिया।
गुरु जाम्भोजी की शिक्षाएँ आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उन्होंने बिश्नोई सम्प्रदाय की स्थापना की, जिसके २९ नियम (बिश-नौई, यानी ३०-२०) हैं। इन नियमों में जीवन जीने के व्यावहारिक और आध्यात्मिक सूत्र निहित हैं:

1. जीव दया (अहिंसा): सभी प्राणियों के प्रति दया और प्रेम रखना। उन्होंने पशु-पक्षियों की रक्षा का संदेश दिया।
2. पर्यावरण संरक्षण: उन्होंने वृक्षों की कटाई को वर्जित ठहराया और जल को संरक्षित करने का आह्वान किया। यह शिक्षा आज के जलवायु संकट के युग में और भी महत्वपूर्ण हो गई है।
3. सामाजिक समानता: उन्होंने जाति प्रथा का विरोध किया और सभी मनुष्यों को समान बताया। उनका दरबार सभी जातियों और वर्गों के लिए खुला था।
4. सादा जीवन और नैतिकता: उन्होंने सत्य बोलने, चोरी न करने, मदिरापान न करने और सादा जीवन जीने पर जोर दिया।

5. स्त्री सम्मान: उन्होंने सती प्रथा जैसी कुरीतियों का विरोध किया और महिलाओं के सम्मान और शिक्षा पर बल दिया।
गुरु जाम्भोजी ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानवता की सेवा और धर्म के सच्चे स्वरूप को प्रसारित करने में लगा दिया। उनके उपदेशों ने राजस्थान और आस-पास के क्षेत्रों के सामाजिक-पारिस्थितिक ताने-बाने को गहराई से प्रभावित किया।

· बिश्नोई समुदाय: आज भी बिश्नोई समुदाय पर्यावरण और वन्यजीव संरक्षण के लिए विश्व भर में जाना जाता है। १८वीं शताब्दी में खेजड़ली के पेड़ों को बचाने के लिए ३६३ बिश्नोईयों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी थी, जो पर्यावरण प्रेम का एक अनुपम उदाहरण है।
· वैश्विक प्रासंगिकता: जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण असंतुलन और सामाजिक विषमता जैसी वैश्विक चुनौतियों के इस दौर में जाम्भोजी की शिक्षाएँ किसी वरदान से कम नहीं हैं। वे केवल एक धार्मिक नेता ही नहीं, बल्कि एक वैश्विक पर्यावरणविद और समाज सुधारक थे।
गुरु जाम्भोजी का व्यक्तित्व और कार्य असाधारण था। वे केवल एक अवतार ही नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक दार्शनिक थे, जिन्होंने ईश्वर की भक्ति को प्रकृति और मानवता की सेवा से जोड़ दिया। उनका संदेश सार्वभौमिक है—एक ऐसा जीवन जीना जो हमें अपने आस-पास की दुनिया के साथ तालमेल बिठाने में मदद करे। उनकी शिक्षाएँ भारतीय संस्कृति की उस गहरी चेतना का प्रतिबिम्ब हैं, जो अध्यात्म औरपारिस्थितिकी को एक-दूसरे का पूरक मानती है।

1. SONIYA - 01-08-2002
2. ANKIT - 11-08-2001
3. SARITA - 10-08-2000
4. Mamta - 08-08-2001
5. SATYAWAN - 25-08-2002
6. Jyoti Devi = 7/8/2002
7. Santosh = 10/2003
8. Muskan = 15/8/2003
9. Manisha = 15/8/2003
10. Sanewa = 24/8/2004
11. Bharti = 26/8/2004

प्रियंका

1. 'गुर कीजै महिला निगुरा न रहिला, गुर बिन ग्यांन न पायला रे भाईला'- पंक्तियाँ किसकी हैं? - गोरखनाथ
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने गोरखरचित कितनी पुस्तकों का उल्लेख किया है? -२८
3. 'गोरख जगायो जोग भगति भगायो लोग।' - पंक्तियाँ किसकी हैं? -तुलसीदास
4. 'धूत कहौ अवधूत कहौ' - पंक्तियाँ किसकी है? -तुलसीदास
5. कुछ सिद्धों के चर्या गीतों और दोहाकोशों का 'बौद्धगाना ओ दोहा' नाम से संपादन-प्रकाशन किसने किया? -म०म० हरप्रसाद शास्त्री
6. सर्वप्रथम किसने सिद्ध साहित्य के संपादन का कार्य किया? - पाश्चात्य प्राच्यविद् बेंडल ने
7. 'महासुखवाद' किस मत का वैशिष्ट्य है? -सिद्ध मत
8. "सरहे गहण गुहिर मग अहिआ। पसू लोअ जिमि रहिआ।।" - पंक्तियाँ किसकी हैं? - सरहपा
9. 'पंडिअ सअल सत्थ वक्खाण्उअ। देहहिं बुद्ध वसंत ण जाणअ।।' - पंक्तियाँ किसकी हैं? - सरहपा
10. "आगम-वेअ पुराणेहि, पाणिअ माण वहन्ति। पक्क-सिरीफले अलिअ जिमि वाहेरीअ भमंति।।" - कण्हणपा
11. 'घर वह खज्जति सहजे रज्जइ, किज्जइ राअ-विराअ।'- पंक्तियाँ किसकी हैं? - सरहपा
12. सिद्धों के चर्यागीतों और दोहाकोशों में प्रमुख अंतर क्या है? - दोहों में मतों का खंडन-मंडन है, चर्या पदों में सिद्धों की अनुभूति और रहस्यभावना। - दोहों की रचना परिनिष्ठित अपभ्रंश में हुई है तो चर्यापदों की अवहट्ठ में
13. जैन साहित्य का विकास कहाँ हुआ? - मध्यदेश के पश्चिमोत्तर में

किरण रानोलिया

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
अवगत	ज्ञात, विदित
अविगत	अव्यक्त, अलग, दूर
अवनि	पृथ्वी
अवन	रक्षा, प्रसन्नता
अपहार	अपहरण, छिपाना
उपहार	भेंट
आदम	मनु
आभार	कृतज्ञता
अभार	भारहीन

अंतर विद्यालय हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता
संस्कार प्लैटो विद्यालय, 1 कि.मी. भगाना रोड, मय्यड़, हिसार

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Forensic Science Laboratory = न्यायवैधक विज्ञान प्रयोगशाला

Forfeit = जब्त करना

Forfeiture = अधिहरण

Forged = जाली/कूटरचित

For information and necessary action = सूचना और आवश्यक कार्यवाही के लिए

Forthcoming = आगामी

Forthwith = तत्काल

Forwarding note = अग्रेषण पत्र

Freight = भाड़ा

Frequency = बारंबारता

From = प्रेषक

Frontier = सीमांत क्षेत्र

Full bench = पूर्ण न्यायपीठ

Fundamental = मौलिक /आधारभूत

Fundamental right := मूल अधिकार

Furnish = प्रस्तुत करना/सजाना

Further = आगे करना

Further action = अगली कार्यवाही

Gazette = राजपत्र

Gazette notification = राजपत्र अधिसूचना

Gazetted = राजपत्रित

Gazetted Post = राजपत्रित पद

General Provident Fund = सामान्य भविष्य निधि

Genuine = प्रामाणिक/यथार्थ

Genuine Statement = यथार्थ कथन

Glossary = शब्द-संग्रह/शब्दावली

Good offices = मध्यस्थता

Good order = अच्छी स्थिति

मेरा संविधान मेरा स्वाभिमान: एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण

"मेरा संविधान मेरा स्वाभिमान" का नारा आजकल चारों ओर गूँज रहा है। यह एक शक्तिशाली और भावनात्मक रूप से आवेशित वाक्य है जो संविधान के प्रति गहरी निष्ठा और उसे अपनी अस्मिता से जोड़ने का भाव पैदा करता है। परन्तु क्या यह नारा केवल एक भावनात्मक जाप बनकर रह गया है, या इसके गहरे निहितार्थ हैं? क्या हम वास्तव में इसके मूल में छिपे दायित्वबोध और आलोचनात्मक चिंतन को समझ पा रहे हैं?

स्वाभिमान का आधार: आदर्श बनाम यथार्थ

निस्संदेह, भारतीय संविधान हमारे लोकतंत्र का मूलमंत्र और हमारे गणराज्य की आत्मा है। इसने हमें एक ऐसा ढाँचा दिया जिसने विविधताओं से भरे एक विशाल देश को एक सूत्र में बाँधे रखा। समानता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व के सिद्धांत किसी भी नागरिक के स्वाभिमान का सबसे मजबूत आधार हैं।
परंतु क्या यह स्वाभिमान सभी के लिए समान रूप से सुलभ है? जब एक दलित व्यक्ति को अभी भी छुआछूत का सामना करना पड़ता है, जब एक महिला को समान कार्य के लिए समान वेतन नहीं मिलता, जब एक religious minority अपने अधिकारों को लेकर असुरक्षित महसूस करती है, तो क्या संविधान में निहित उनका स्वाभिमान सुरक्षित रह जाता है? यहाँ "मेरा संविधान" का अर्थ केवल गर्व की बात करना नहीं, बल्कि उन स्थितियों पर चिंता जताना भी है जहाँ इसके आदर्शों का पालन नहीं हो रहा।

नारेबाजी का खतरा: स्वाभिमान बनाम अहंकार

किसी भी नारे का सबसे बड़ा खतरा यह है कि वह विचार-विमर्श के स्थान पर जय-पराजय की भावना ले आता है। "मेरा संविधान" का उच्चारण करते समय यह याद रखना जरूरी है कि यह 'किसी' के 'खिलाफ' नहीं, बल्कि 'सबके' 'लिए' है। संविधान की आलोचना करना या उसकी व्याख्या पर सवाल उठाना देशद्रोह नहीं, बल्कि एक सजग नागरिक का कर्तव्य है। एक लोकतंत्र की ताकत उसकी आत्म-आलोचनात्मक क्षमता में होती है।

जब हम संविधान को केवल एक पवित्र, अछूत ग्रंथ की तरह देखने लगते हैं और उस पर बहस करने वालों को 'दुश्मन' का तमगा दे देते हैं, तो हम उसके सबसे बुनियादी सिद्धांत—'बोलने की स्वतंत्रता'—का ही गला घोंट देते हैं। क्या यह विडंबना नहीं कि जिस संविधान की रक्षा का दावा किया जा रहा है, उसके मूल भाव की हत्या हो रही है?

कर्तव्यों की उपेक्षा: अधिकार बनाम दायित्व

"मेरा संविधान मेरा स्वाभिमान" का अर्थ अक्सर केवल अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता तक सीमित होकर रह जाता है। पर क्या स्वाभिमान सिर्फ अधिकार लेने से आता है? संविधान ने हमें 11 मौलिक कर्तव्य भी दिए हैं। क्या हम में से कितने लोगों ने उन्हें पढ़ा है? राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करना, सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना और पर्यावरण की रक्षा करना—ये हमारे कर्तव्य हैं।

क्या हमारा स्वाभिमान तब तक पूरा नहीं होगा जब तक हम इन कर्तव्यों का निर्वहन नहीं करते? सड़क पर कूड़ा फैलाना, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुँचाना, और अंधविश्वास को बढ़ावा देना—क्या ये संवैधानिक कर्तव्यों का उल्लंघन नहीं है? सच्चा स्वाभिमान तब आएगा जब हम अपने अधिकारों की माँग और कर्तव्यों के पालन के बीच संतुलन बना पाएँगे।

निष्कर्ष: स्वाभिमान एक सक्रिय प्रक्रिया है

"मेरा संविधान मेरा स्वाभिमान" कोई ऐसा नारा नहीं है जिसे केवल एक बैनर पर लिखकर या सोशल मीडिया पर पोस्ट करके हम अपना फर्ज पूरा कर सकें। यह एक सक्रिय, जीवंत और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

इसका अर्थ है:

· संविधान को पढ़ना, समझना और उस पर सवाल उठाना।
· यह पहचानना कि इसके आदर्श और यथार्थ के बीच अभी एक बड़ा अंतर है।
· केवल अपने अधिकारों की नहीं, बल्कि अपने कर्तव्यों की भी चेतना रखना।
· दूसरों की बात सुनना और उनके संवैधानिक अधिकारों का सम्मान करना।

सच्चा स्वाभिमान तब है जब संविधान हमारी जेब में नहीं, बल्कि हमारे आचरण में हो। जब यह हमारी सोच, हमारे फैसलों और हमारे रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा बने। केवल तभी यह नारा एक सार्थक और जीवंत वास्तविकता बन पाएगा।

पुस्तक समीक्षा

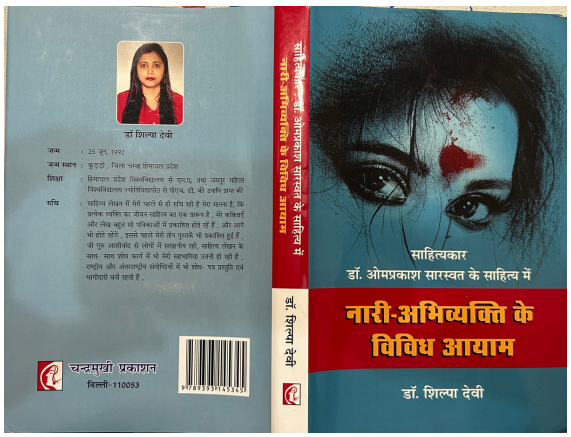

लेखक: डॉ. शिल्पा देवी
पुस्तक: “साहित्यकार डॉ. ओम्प्रकाश सारस्वत के साहित्य में नारी-अभिव्यक्ति के विविध आयाम"
मूल्य: ₹650.00 चन्द्रमुखी प्रकाशन नई दिल्ली (भारत)

डॉ. ओमप्रकाश सारस्वत का साहित्य एक बहुआयामी सृजनात्मक उद्यम है जिसमें नारी अभिव्यक्ति को विविध रूपों में देखा जा सकता है। शोधार्थी शिल्पा देवी द्वारा प्रस्तुत यह अध्ययन डॉ. सारस्वत के रचनात्मक फलक पर नारी की संवेदना, भूमिका और सामाजिक चेतना का आलोचनात्मक परीक्षण करता है। उनके काव्य, नाटक, कहानी और निबंध विधाओं में स्त्री को केवल विषय नहीं, बल्कि विचार और दृष्टि का केन्द्र बनाया गया है।
सारस्वत के काव्य में नारी-मन की जटिल अनुभूतियाँ, सांस्कृतिक अस्मिता और यथार्थपरक दृष्टिकोण सजीव हो उठते हैं। उनकी कविताएँ केवल सौंदर्यानुभूति तक सीमित नहीं, अपितु स्त्री की सामाजिक, राजनीतिक एवं नैतिक चेतना को भी उद्घाटित करती हैं। निबंधों में व्यंग्य और विचार के माध्यम से नारी की विविध भूमिकाओं को उजागर करते हुए लेखक उसे समकालीन विमर्श से जोड़ते हैं।
नाटकों में सारस्वत स्त्री को प्रायः केंद्रीय भूमिका में रखते हैं एक ऐसी भूमिका जो पुरुष पात्रों की तुलना में अधिक विवेकशील, संवेदी और निर्णयक्षम दिखाई देती है। भाषा और संवाद विन्यास में वे लोकचेतना और शास्त्रीय शैली का संतुलन बनाए रखते हैं। उनकी कहानियों में ग्रामीण स्त्री जीवन की संवेदनाएँ, संघर्ष और स्वाभिमान अत्यंत सहजता से चित्रित होते हैं।
डॉ. सारस्वत के समग्र लेखन में नारी केवल चरित्र नहीं, बल्कि चेतना की वाहक है। वह कभी माँ है, कभी प्रेयसी, कभी संघर्षशील ग्रामीण स्त्री, तो कभी विचारशील आत्मा में सार्थक और मुखर। हर रूप शोधार्थी ने इस समृद्ध साहित्यिक व्यक्तित्व के बहुआयामी कृतित्व में से नारी विमर्श को गहराई से खोजा है, जो निश्चित ही हिंदी साहित्य में स्त्री-अध्ययन के लिए एक मूल्यवान प्रयास है। भाषा संयत, प्रस्तुति गंभीर और दृष्टिकोण संतुलित है। यह शोधकार्य केवल एक लेखकीय मूल्यांकन नहीं, अपितु एक सशक्त नारी विमर्श को पुनर्परिभाषित करता है।
यह अध्ययन नारी-अभिव्यक्ति को एक नए आलोचनात्मक बोध के साथ सामने लाता है और डॉ. सारस्वत के साहित्य को स्त्री दृष्टि से देखने की एक सशक्त पहल है। यह कृति शिक्षकों, विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए समान रूप से उपयोगी है।

डॉ राजपाल
हिंदी विभाग
गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार